

---

# Pashupatasutram

---

## पाशुपतसूत्रम्

---

### Document Information



---

Text title : Pashupata Sutram

File name : pAshupatasUtram.itx

Category : shiva, sUtra

Location : doc\_shiva

Transliterated by : Ruma Dewan

Proofread by : Ruma Dewan

Description/comments : Shaiva Agama Tantra, Pashupata Shaiva Yoga

Latest update : September 18, 2022

Send corrections to : [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

November 22, 2022

*sanskritdocuments.org*

---



पाशुपतसूत्रम्



॥ ॐ श्रीसच्चिदानन्दाय नमः ॥

अथ श्रीलकुलीशकृतं पाशुपतसूत्रम् ।

प्रथमोऽध्यायः ।

॥ पदार्थोपन्यासः ॥

अथातः पशुपतेः पाशुपतं योगविधिं व्याख्यास्यामः ॥ १.१ ॥

॥ भस्मप्रकरणम् एवं यमप्रकरणम् ॥

भस्मना त्रिषवणं स्नायीत ॥ १.२ ॥

भस्मनि शयीत ॥ १.३ ॥

अनुस्नानम् ॥ १.४ ॥

निर्माल्यम् ॥ १.५ ॥

लिङ्गधारी ॥ १.६ ॥

आयतनवासी ॥ १.७ ॥

हसितगीतनृत्तडुण्डुङ्कारनमस्कारजप्योपहारेणोपतिष्ठेत् ॥ १.८ ॥

महादेवस्य दक्षिणामूर्तेः ॥ १.९ ॥

॥ आयतनप्रकरणम् ॥

एकवासाः ॥ १.१० ॥

अवासा वा ॥ १.११ ॥

मूत्रपुरीषं नावेक्षेत् ॥ १.१२ ॥

स्त्रीशूद्रं नाभिभाषेत् ॥ १.१३ ॥  
 यद्यवेक्षेद्यद्यभिभाषेत् ॥ १.१४ ॥  
 उपस्पृश्य ॥ १.१५ ॥  
 प्राणायामं कृत्वा ॥ १.१६ ॥  
 रौद्रीं गायत्रीं बहुरूपीं वा जपेत् ॥ १.१७ ॥  
 अकलुषमतेः ॥ १.१८ ॥  
 चरतः ॥ १.१९ ॥  
 ततोऽस्य योगः प्रवर्तते ॥ १.२० ॥  
 ॥ आधिकारिकम् ऐश्वर्यप्रकरणम् ॥  
 दर्शनश्रवणमननविज्ञानानि चास्य प्रवर्तन्ते ॥ १.२१ ॥  
 सर्वज्ञता ॥ १.२२ ॥  
 मनोजवित्वम् ॥ १.२३ ॥  
 कामरूपित्वम् ॥ १.२४ ॥  
 विकरणः ॥ १.२५ ॥  
 धर्मित्वं च ॥ १.२६ ॥  
 ॥ षड्व्रीप्रकरणम् ॥  
 सर्वे चास्य वश्या भवन्ति ॥ १.२७ ॥  
 सर्वेषां चावश्यो भवति ॥ १.२८ ॥  
 सर्वाश्चाविशति ॥ १.२९ ॥  
 सर्वेषां चानावेश्यो भवति ॥ १.३० ॥  
 सर्वे चास्य वध्या भवन्ति ॥ १.३१ ॥  
 सर्वेषां चावध्यो भवति ॥ १.३२ ॥  
 ॥ ऐश्वर्यनित्यत्वप्रकरणम् ॥  
 अभीतः ॥ १.३३ ॥

अक्षयः ॥ १.३४ ॥

अजरः ॥ १.३५ ॥

अमरः ॥ १.३६ ॥

सर्वत्र चाप्रतिहतगतिर्भवति ॥ १.३७ ॥

इत्येतैर्गुणैर्युक्तो भगवतो महादेवस्य महागणपतिर्भवति ॥ १.३८ ॥

॥ सद्योऽजातमन्त्रप्रकरणम् ॥

अत्रेदं ब्रह्म जपेत् ॥ १.३९ ॥

सद्योऽजातं प्रपद्यामि ॥ १.४० ॥

सद्योऽजाताय वै नमः ॥ १.४१ ॥

भवे भवे नातिभवे ॥ १.४२ ॥

भजस्व माम् ॥ १.४३ ॥

भवोद्भवः ॥ १.४४ ॥

## द्वितीयोऽध्यायः ।

॥ आधिकारिकं कार्यकारणप्रकरणम् ॥

वामः ॥ २.१ ॥

देवस्य ॥ २.२ ॥

ज्येष्ठस्य ॥ २.३ ॥

रुद्रस्य ॥ २.४ ॥

कलितासनम् ॥ २.५ ॥

सार्वकामिक इत्याचक्षते ॥ २.६ ॥

॥ आनुषङ्गकं कार्यकारणप्रकरणम् ॥

अमङ्गलं चात्र मङ्गलं भवति ॥ २.७ ॥

अपसव्यं च प्रदक्षिणम् ॥ २.८ ॥

तस्मादुभयथा यष्टव्यः ॥ २.९ ॥  
 देववत्पितृवच्च ॥ २.१० ॥  
 उभयं तु रुद्रे देवाः पितरश्च ॥ २.११ ॥  
 ॥ चर्याप्रकरणम् ॥  
 हर्षाप्रमादी ॥ २.१२ ॥  
 चर्यायां चर्यायाम् ॥ २.१३ ॥  
 माहात्म्यमवाप्नोति ॥ २.१४ ॥  
 अतिदत्तमतीष्टम् ॥ २.१५ ॥  
 अतितप्तं तपस्तथा ॥ २.१६ ॥  
 अत्यागतिं गमयते ॥ २.१७ ॥  
 तस्मात् ॥ २.१८ ॥  
 भूयस्तपश्चरेत् ॥ २.१९ ॥  
 नान्यभक्तिस्तु शङ्करे ॥ २.२० ॥  
 ॥ वामदेवमन्त्रप्रकरणम् ॥  
 अत्रेदं ब्रह्म जपेत् ॥ २.२१ ॥  
 वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमो रुद्राय नमः ॥ २.२२ ॥  
 कालाय नमः ॥ २.२३ ॥  
 कलविकरणाय नमः ॥ २.२४ ॥  
 बलप्रमथनाय नमः ॥ २.२५ ॥  
 सर्वभूतदमनाय नमः ॥ २.२६ ॥  
 मनोऽमनाय नमः ॥ २.२७ ॥

## तृतीयोऽध्यायः ।

- ॥ विधिप्रकरणम् ॥  
 अव्यक्तलिङ्गी ॥ ३.१ ॥  
 व्यक्ताचारः ॥ ३.२ ॥  
 अवमतः ॥ ३.३ ॥  
 सर्वभूतेषु ॥ ३.४ ॥  
 परिभूयमानश्चरेत् ॥ ३.५ ॥  
 अपहतपाप्मा ॥ ३.६ ॥  
 परेषां परिवादात् ॥ ३.७ ॥  
 पापं च तेभ्यो ददाति ॥ ३.८ ॥  
 सुकृतं च तेषामादत्ते ॥ ३.९ ॥  
 तस्मात् ॥ ३.१० ॥  
 प्रेतवच्चरेत् ॥ ३.११ ॥  
 काथेत वा ॥ ३.१२ ॥  
 स्पन्देत वा ॥ ३.१३ ॥  
 मण्डेत वा ॥ ३.१४ ॥ (मन्देत वा)  
 शृङ्गारेत वा ॥ ३.१५ ॥  
 अपितत्कुर्यात् ॥ ३.१६ ॥  
 अपितद्भाषेत ॥ ३.१७ ॥  
 येन परिभवं गच्छेत् ॥ ३.१८ ॥  
 परिभूयमानो हि विद्वान्कृत्स्नतपा भवति ॥ ३.१९ ॥  
 ॥ अघोरमन्त्रप्रकरणम् ॥  
 अत्रेदं ब्रह्म जपेत् ॥ ३.२० ॥  
 अघोरेभ्यः ॥ ३.२१ ॥

अथ घोरेभ्यः ॥ ३.२२ ॥  
 घोरघोरतरेभ्यश्च ॥ ३.२३ ॥  
 सर्वेभ्यः ॥ ३.२४ ॥  
 शर्वसर्वेभ्यः ॥ ३.२५ ॥  
 नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः ॥ ३.२६ ॥

### चतुर्थोऽध्यायः ।

॥ विद्याज्ञानप्रकरणम् ॥  
 गूढविद्या तप आनन्त्याय प्रकाशते ॥ ४.१ ॥  
 गूढव्रतः ॥ ४.२ ॥  
 गूढपवित्रवाणिः ॥ ४.३ ॥  
 सर्वाणि द्वाराणि पिधाय ॥ ४.४ ॥  
 बुद्ध्या ॥ ४.५ ॥  
 ॥ आधिकारिकम् असन्मानचरिप्रकरणम् ॥  
 उन्मत्तवदेको विचरेत लोके ॥ ४.६ ॥  
 कृतान्नमुत्सृष्टमुपाददीत ॥ ४.७ ॥  
 उन्मत्तो मूढ इत्येवं मन्यन्ते इतरे जनाः ॥ ४.८ ॥  
 ॥ आनुषङ्गिकं असन्मानचरिप्रकरणम् ॥  
 असन्मानो हि यन्त्राणां सर्वेषामुत्तमः स्मृतः ॥ ४.९ ॥  
 इन्द्रो वा अग्रे असुरेषु पाशुपतमचरत् ॥ ४.१० ॥  
 स तेषामिष्टापूर्तमादत्त ॥ ४.११ ॥  
 मायया सुकृतया समविन्दत ॥ ४.१२ ॥  
 निन्दा ह्येषानिन्दा तस्मात् ॥ ४.१३ ॥  
 निन्द्यमानश्चरेत् ॥ ४.१४ ॥

अनिन्दितकर्मा ॥ ४.१५ ॥  
 सर्वविशिष्टोऽयं पन्थाः ॥ ४.१६ ॥  
 सत्पथः ॥ ४.१७ ॥  
 कुपथास्त्वन्ये ॥ ४.१८ ॥  
 अनेन विधिना रुद्रसमीपं गत्वा ॥ ४.१९ ॥  
 न कश्चिद्ब्राह्मणः पुनरावर्तते ॥ ४.२० ॥  
 ॥ तत्पुरुषमन्त्रप्रकरणम् ॥  
 अत्रेदं ब्रह्म जपेत् ॥ ४.२१ ॥  
 तत्पुरुषाय विद्महे ॥ ४.२२ ॥  
 महादेवाय धीमहि ॥ ४.२३ ॥  
 तन्नो रुद्रः प्रचोदयाथत् ॥ ४.२४ ॥

## पञ्चमोऽध्यायः ।

॥ योगिलक्षणम् ॥  
 असङ्गः ॥ ५.१ ॥  
 योगी ॥ ५.२ ॥  
 नित्यात्मा ॥ ५.३ ॥  
 अजः ॥ ५.४ ॥  
 मैत्रः ॥ ५.५ ॥  
 अभिजायते ॥ ५.६ ॥  
 इन्द्रियाणामभिजयात् ॥ ५.७ ॥  
 रुद्रः प्रोवाच तावत् ॥ ५.८ ॥  
 ॥ शून्यागारगुहाप्रकरणम् ॥  
 शून्यागारगुहावासी ॥ ५.९ ॥



देवनित्यः ॥ ५.१० ॥  
 जितेन्द्रियः ॥ ५.११ ॥  
 षण्मासान्नित्ययुक्तस्य ॥ ५.१२ ॥  
 भूयिष्ठं सम्प्रवर्तते ॥ ५.१३ ॥  
 भैक्ष्यम् ॥ ५.१४ ॥  
 पात्रागतम् ॥ ५.१५ ॥  
 ॥ योगपदार्थप्रकरणम् ॥ (योगविषयक वस्तु प्रकरणम्)  
 मांसमदुष्यं लवणेन वा ॥ ५.१६ ॥  
 आपो वापि यथाकालमश्नीयादनुपूर्वशः ॥ ५.१७ ॥  
 गोधर्मा मृगधर्मा वा ॥ ५.१८ ॥  
 अद्भिरेव शुचिर्भवेत् ॥ ५.१९ ॥  
 सिद्धयोगी न लिप्यते कर्मणा पातकेन वा ॥ ५.२० ॥  
 ऋचमिष्टामधीयीत गायत्रीमात्मयन्त्रितः ॥ ५.२१ ॥  
 रौद्रीं वा बहुरूपीं वा ॥ ५.२२ ॥  
 अतो योगः प्रवर्तते ॥ ५.२३ ॥  
 ओङ्कारमभिध्यायीत ॥ ५.२४ ॥  
 हृदि कुर्वीत धारणाम् ॥ ५.२५ ॥  
 ऋषिर्विप्रो महानेषः ॥ ५.२६ ॥  
 वाग्विशुद्धः ॥ ५.२७ ॥  
 महेश्वरः ॥ ५.२८ ॥  
 ॥ दुःखान्तप्रकरणम् ॥  
 (.....) ॥ ५.२९ ॥  
 श्मशानवासी ॥ ५.३० ॥  
 धर्मात्मा ॥ ५.३१ ॥

यथालब्धोपजीवकः ॥ ५.३२ ॥  
 लभते रुद्रसायुज्यम् ॥ ५.३३ ॥  
 सदा रुद्रमनुस्मरेत् ॥ ५.३४ ॥  
 छित्त्वा दोषाणां हेतुजालस्य मूलम् ॥ ५.३५ ॥  
 बुद्ध्या ॥ ५.३६ ॥  
 सञ्चित्तम् ॥ ५.३७ ॥  
 स्थापयित्वा च रुद्रे ॥ ५.३८ ॥  
 एकः क्षेमी सन्वीतशोकः ॥ ५.३९ ॥  
 अप्रमादी गच्छेद्दुःखानामन्तं ईशप्रसादात् ॥ ५.४० ॥  
 ॥ ईशानमन्त्रप्रकरणम् ॥  
 अत्रेदं ब्रह्म जपेत् ॥ ५.४१ ॥  
 ईशानः सर्वविद्यानाम् ॥ ५.४२ ॥  
 ईश्वरः सर्वभूतानाम् ॥ ५.४३ ॥  
 ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा ॥ ५.४४ ॥  
 शिवो मे अस्तु ॥ ५.४५ ॥  
 सदा ॥ ५.४६ ॥  
 शिवः ॥ ५.४७ ॥  
 इति श्रीलकुलीशकृतं पाशुपतसूत्रम् ।  
 ॥ शुभम् ॥

The prakaraNam-s pertain to the Kaundinya  
 Bhashya, and their placement occurs  
 with some differences amongst the various  
 publications. These have been marked here for  
 ease of reference.

Sutra 5.29 is reported as missing in some

publications, which therefore have the last Sutra numbered as 5.47; while other publications have concluding Sutra numbered as 5.46.

Encoded and proofread by Ruma Dewan

---



*Pashupatasutram*

pdf was typeset on November 22, 2022



Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

